आधी आबादी

हर सन्डे वूमेन्स डे

संस्करण – रविवार, 14 अप्रैल 2024, अंक – 49

विशेष संपादकीय

मर्दों को करने होंगे अपने दिमाग के जाले साफ़!

– चारुल मल्लिक

आईपीएल में बीते सोमवार को राजस्थान रॉयल्स और रॉयल चैलेंजर्स बेंगुलरू के बीच हुए मैच में टॉस से पहले की बात है। राजस्थान रॉयल्स ने ग्रामीण महिलाओं के सशक्तीकरण से जुड़ा एक अभियान शुरू किया है। इसके तहत वे महिलाओं से जुड़े कार्यक्रमों के लिए आर्थिक सहायता देकर ग्रामीण इलाके को सौर-ऊर्जा से रोशन करने के लिए मदद देंगे। इसे उन्होंने 'पिंक प्रॉमिस' कहा है। मैच से पहले उसी कार्यक्रम के तहत एक महिला भँवरी देवी ने दोनों टीम के कप्तानों को सौर ऊर्जा से चलने वाला एक लैम्प और सौर पैनल उपहार में दिया। इस वक्त मैदान पर माइक भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व खिलाड़ी संजय मांजरेकर के हाथ में था। जैसे ही महिलाओं से जुड़ा चंद मिनटों का यह संक्षिप्त सा कार्यक्रम पूरा हुआ संजय मांजरेकर ने कहा कि अब 'सीरियस बिजनेस' की तरफ़ वापस लौटते हैं। 'सीरियस बिजनेस' यानी गंभीर काम। साफ़ है कि संजय का इशारा क्रिकेट की तरफ था और इसी क्रम में उन्होंने क्रिकेट को गंभीर बता कर महिलाओं के मुद्दे को हल्का-फुल्का कर दिया। देखने सुनने वालों को संजय मांजरेकर की एक वाक्य की यह टिप्पणी पसंद नहीं आई। अनेक लोग सोशल मीडिया पर उनकी काफ़ी आलोचना करने लगे। राजस्थान रॉयल्स की तरफ़ से महिला सशक्तीकरण के लिए की जाने वाली कोशिश सराहनीय क़दम है। मगर जिस तरह से संजय मांजरेकर ने उसे पेश किया और एक जुमला इस्तेमाल किया, वह उस कोशिश की सारी गंभीरता को ख़त्म कर देता है।

एक शब्द का ग़लत इस्तेमाल किस तरह एक अच्छे काम पर पानी फेर सकता है, इसका यह जीता-जागता नमूना है। अगर महिला सशक्तीकरण के लिए किए जाने वाले काम 'गंभीर' नहीं हैं, तो क्या चीज़ 'गंभीर'हैं? आख़िर ऐसी सोच आती कहाँ से है? मर्द बिरादरी में संजय अकेले शख़्स नहीं होंगे जो इस तरह सोचते हैं। मर्द बिरादरी में अच्छी-ख़ासी संख्या ऐसे लोगों की है जो महिलाओं और महिलाओं से जुड़े किसी काम को गंभीरता से नहीं लेते। पुरुषों को ऐसा लगता है कि गंभीरता से सिर्फ़ उन्हें लिया जाना चाहिए। वे ही गंभीर हो सकते हैं। उनके काम ही महत्वपूर्ण होते हैं। यानी पितृसत्ता में पुरुष ही सब कुछ है और स्त्रियाँ गौण हैं। बाद सवाल है कि आख़िर कौन सी मानसिकता है जो स्त्रियों के बारे में ऐसी राय रखती है?

यह दिलचस्प है कि स्त्रियों के बारे में ऐसी राय रखने वाले हमारे समाज में हैं। वे न सिर्फ़ बेबाकी से अपनी राय रखते हैं बल्कि उन्हें अंदाज़ा भी नहीं होता है कि उनकी बातों में ग़लत क्या है? उन्हें ये बातें सामान्य लगती हैं। मर्दों को थोड़ा ठहरकर सोचने की ज़रूरत है। तब ही उन्हें यह समझ में आएगा कि ऐसे जुमले ग़ैरज़रूरी ही नहीं बल्कि ग़लत हैं। मुमकिन है, संजय ने यह बात ग़ैर इरादतन कही हो। मगर यह बात उनकी ज़बान से निकली कैसे? दिमाग़ के किसी कोने में यह बात बैठी होगी, तब ही बाहर आई। इसलिए मर्दों को अपने दिमाग़ में पड़े जाले को साफ़ करने की ज़रूरत है।

देश में इन दिनों चुनाव प्रचार जोरों पर हैं। इस मौके पर हम आपके लिए लेकर आए हैं कविवर अल्हड़ बीकानेरी की एक प्रसिद्ध हास्य व्यंग्य रचना।

बस एक बार मुझको सरकार बनाने दो

■ अल्हड़ बीकानेरी

जो बुड्ढे खूसट नेता हैं, उनको खड्डे में जाने दो
बस एक बार, बस एक बार मुझको सरकार बनाने दो।
मेरे भाषण के डंडे से भागेगा भूत गरीबी का।
मेरे वक्तव्य सुनें तो झगड़ा मिटे मियां और बीवी का।
मेरे आश्वासन के टॉनिक का एक डोज़ मिल जाए अगर,
चंदगी राम को करे चित्त पेशेंट पुरानी टीबी का।
मरियल सी जनता को मीठे, वादों का जूस पिलाने दो,
बस एक बार, बस एक बार, मुझको सरकार बनाने दो।
जो कत्ल किसी का कर देगा मैं उसको बरी करा दूंगा,
हर घिसी पिटी हीरोइन की प्लास्टिक सर्जरी करा दूंगा;

लड़के लड़की और लेक्चरर, सब फिल्मी गाने गाएंगे,
हर कॉलेज में सब्जेक्ट फिल्म का कंपल्सरी करा दूंगा।
हिस्ट्री और बीज गणित जैसे विषयों पर बैन लगाने दो
बस एक बार, बस एक बार, मुझको सरकार बनाने दो।

जो बिल्कुल फक्कड़ हैं, उनको राशन उधार तुलवा दूंगा,
जो लोग पियक्कड़ हैं, उनके घर में ठेके खुलवा दूंगा;

सरकारी अस्पताल में जिस रोगी को मिल न सका बिस्तर,
घर उसकी नब्ज़ छूटते ही मैं एंबुलेंस भिजवा दूंगा।
मैं जन-सेवक हूं, मुझको भी, थोड़ा-सा पुण्य कमाने दो,
बस एक बार, बस एक बार, मुझको सरकार बनाने दो।
श्रोता आपस में मरें कटें कवियों में फूट नहीं होगी,
कवि सम्मेलन में कभी, किसी की कविता हूट नहीं होगी;
कवि के प्रत्येक शब्द पर जो तालियां न खुलकर बजा सकें,
ऐसे मनहूसों को, कविता सुनने की छूट नहीं होगी।
कवि की हूटिंग करने वालों पर, हूटिंग टैक्स लगाने दो,
बस एक बार, बस एक बार, मुझको सरकार बनाने दो।

ठग और मुनाफाखोरों की घेराबंदी करवा दूंगा,
सोना तुरंत गिर जाएगा चांदी मंदी करवा दूंगा;
मैं पल भर में सुलझा दूंगा परिवार नियोजन का पचड़ा,
शादी से पहले हर दूल्हे की नसबंदी करवा दूंगा।
होकर बेधड़क मनाएंगे फिर हनीमून दीवाने दो,
बस एक बार, बस एक बार, मुझको सरकार बनाने दो।
बस एक बार, बस एक बार, मुझको सरकार बनाने दो।

इंटरव्यू

औरतों को उड़ान भरने दो: जूही परमार

"धारावाहिक 'कुमकुम' से दर्शकों के दिलों में जगह बनाने वाली एक्ट्रेस जूही परमार अपनी सीरीज 'ये मेरी फैमिली' के सीजन 3 को लेकर सुर्खियों में हैं। हाल ही में उन्होंने वरिष्ठ संवाददाता रेखा से बात की जो आप यहाँ पढ़ सकते हैं।"

सवाल: आपकी सीरीज 'ये मेरी फैमिली' परिवार पर ही आधारित है, आपके लिए परिवार कितनी अहमियत रखता है?

जूही: मेरे लिए तो मेरी जिंदगी का आधार ही परिवार है। समय के साथ-साथ जिंदगी में जैसे-जैसे तजुर्बे होते गए, एक बात समझ में आई कि आप चाहे कितने भी रिश्ते बना लें आपकी जिंदगी में कितने भी लोग आ जाएं, मगर आप जिनसे बिलॉन्ग करते हैं, जिनके पास लौट कर जाते हैं, वो आपका परिवार ही होता है। मेरी खुशी भी उन्हीं से जुड़ी है। वो खुश होते हैं, तो मैं खुश होती हूं। मेरे पैरंट्स, मेरी बेटी, मेरा ब्रदर इन लॉ ठीक हैं, तो मैं ठीक हूं। चाहे वो आपके कितने ही करीबी दोस्त क्यों न हों। परिवार के अलावा कोई भी रिश्ता हमेशा के लिए नहीं होता।

सवाल: एक सिंगल मदर के रूप में आपकी सबसे बड़ी ताकत क्या है?

जूही: मेरी सबसे बड़ी ताकत हैं मेरे मॉम-डैड, जो मेरी बैक बोन भी हैं और मेरा आधार स्तंभ भी। उन्हीं की वजह से मैं सिंगल पैरंट की जर्नी को पार कर पा रही हूं। उन्होंने मुझे कभी महसूस ही नहीं होने दिया कि मैं अकेली हूं। कोई भी सिंगल पैरंट बनना नहीं चाहता, मगर हालत ऐसे हो जाते हैं कि आपको ये रास्ता चुनना पड़ता है। ऐसे में जब आपको अपने पैरंट्स का सपोर्ट मिलता है, तो आपके लिए मुश्किल आसान हो जाती है।

सवाल: आप एक मजबूत महिला का प्रतिनिधित्व करती हैं, आपको औरतों से जुड़ी क्या बात सबसे ज्यादा परेशान करती है?

जूही: मुझे एक ही चीज पर सबसे आपत्ति है और वो है जजमेंट। औरतों को लेकर बहुत जल्दी और आसानी से जजमेंट पास कर दिया जाता है कि वो गलत है। किसी भी हालात में दोषी उसे ही करार दिया जाता है। मैंने हाल ही में विमेन्स डे पर पोस्ट भी किया था कि औरत जैसी है, उसे रहने दो। उसे गिरने दो, उठने दो और फिर उसे ऊंचा उड़ने दो, ऊंची उड़ान भरने दो।

सवाल: अब आप ओटीटी प्लैटफॉर्म पर हैं, मगर एक अरसा आपने टीवी पर बिताया और टीवी पर आरोप लगता रहा है कि वहां रिग्रेसिव कॉन्टेंट दर्शाया जाता है?

जूही: मैं ऐसा नहीं समझती कि सिर्फ रिग्रेसिव ही नहीं रहा है। हां, टीवी का स्टोरी टेलिंग का अंदाज अलग है, क्योंकि टीवी की टारगेट ऑडियंस अलग होती है और उसी को ध्यान में रखकर वहां का कॉन्टेंट बनाया जाता है। मैं अपने शो कुमकुम की ही बात करूं, तो उस समय विडो रीमैरिज जैसे मुद्दे को प्रमोट करना बहुत बड़ी बात है। सीरियल में 21 साल की लड़की का विधवा हो जाना और फिर उसे उसी के देवर के साथ पुनर्विवाह करवाना उस समय बहुत छोटी-मोटी बात नहीं थी, जो हमने सीरियल में दिखाई थी, जबकि वो उस समय सोचा नहीं जा सकता था। तो ये एक प्रोग्रेसिव शो था। उसी तरह श्वेता और वरुण का एक शो आता था, मेरे डैड की दुल्हन, जहां उम्रदराज होने के बाद उन्हें एक-दूसरे से प्यार हो जाता है। टीवी पर प्रोग्रेसिव शो भी रहे, मगर लोगों ने रिग्रेसिव चीजों पर ज्यादा ध्यान दिया है। मैं टीवी को न कम समझती हूं और न ही रिग्रेसिव, मैं तो टीवी की वकील हूं, वो मेरा घर है, मेरा गढ़ है।

सवाल: आधी आबादी के लिए आपका क्या संदेश है?

जूही: मैं आधी आबादी के बजाय पुरुषों से कुछ कहना चाहूँगी कि महिलाओं को बंधन में मत बाँधिए। उन्हें उड़ान भरने की पूरी स्वतंत्रता मिलनी चाहिए ताकि वो अपने हिस्से का आसमान खुद सजा सकें।

हलचल

शत्रुघ्न सिन्हा ने ममता बनर्जी को बताया 'आयरन लेडी', कंगना रनौत पर किया वार

लोकसभा चुनाव के मद्देनजर सियासी पारा हाई है। सभी राजनीतिक पार्टियां चुनाव प्रचार में जुटी हैं। आरोप-प्रत्यारोप का दौर भी जारी है। एक तरफ बीजेपी विपक्षी नेताओं पर हो रही जांच एजेंसी की कार्रवाई को सही ठहरा रही है तो वहीं विपक्षी पार्टियां सत्ताधारी पार्टी पर जांच एजेंसियों पर राजनीतिक दवाब डालने का आरोप लगा रही हैं। इस बीच पटना दौरे पर पहुंचे टीएमसी सांसद शत्रुघ्न सिन्हा ने कहा कि दिल्ली में विरोध प्रदर्शन करने के लिए तृणमूल कांग्रेस को मजबूर किया गया है। शत्रुघ्न सिन्हा को टीएमसी ने एक बार फिर से आसनसोल से चुनाव मैदान में उतारा है। उन्होंने कहा कि ममता बनर्जी आयरन लेडी हैं। ममता बनर्जी की लोकप्रियता से बीजेपी में घबराहट है। बीजेपी का मिशन 400 पार नामुमकिन लग रहा है। बंगाल में NIA के ऊपर हमला गलतफहमी में किया गया। अभिनेता ने कहा कि चुनाव आयोग अगर चुनाव के दौरान किसी राज्य के मुख्य सचिव या आईजी को हटा रहे हैं तो फिर ईडी, सीबीआई, इनकम टैक्स और एनआईए के मुखिया को क्यों नहीं हटाया जा रहा है। इसी मांग को लेकर तृणमूल कांग्रेस से दिल्ली में विरोध प्रदर्शन कर रही है। कंगना पर निशाना साधते हुए उन्होंने कहा कि बॉलीवुड के कई अभिनेता हैं, जो राजनीति में आ गए हैं और इन से पूछिए कि भारत का पहला प्रधानमंत्री कौन था तो कहते हैं नेताजी सुभाष चंद्र बोस। कंगना रनौत में ज्ञान की कमी है, मगर धीरे-धीरे अनुभव हो जाएगा।

लोकसभा चुनाव से पहले सड़क पर फिर उतरीं संदेश.खाली की महिलाएं

पश्चिम बंगाल के संदेशखाली की तस्वीर अभी भी नहीं बदली है। शेख शाहजहां, शिबू हाजरा, उत्तम सरदार की गिरफ्तारी के बाद भी तस्वीर नहीं बदली है। एक बार फिर इलाके की महिलाएं सड़क पर उतरकर प्रदर्शन कर रही हैं। शुक्रवार सुबह से ही ये तस्वीर सामने आ रही है। पहले महिलाओं ने जमीन हड़पने, महिला उत्पीड़न जैसी शिकायतें की थीं। इस बार महिलाओं के खिलाफ अत्याचार के खिलाफ नहीं, बल्कि अपने अधिकारों की मांग को लेकर सड़क पर उतरी हैं. महिलाओं ने 100 दिनों के काम के पैसे के भुगतान नहीं किए जाने के विरोध में विरोध प्रदर्शन किया है। संदेशखाली के ब्लॉक नंबर 1 से संबंधित नित्यबेरिया के निवासियों ने शिकायत की कि साल 2022 में उन लोगों ने 16 दिन काम किया गया था। आरोप है कि 100 दिनों के काम का पैसा स्थानीय टीएमसी के नेताओं के परिवारों को बांट दिया गया। सवाल यह है कि यह कैसे हुआ? कुछ लोगों का कहना है कि 16 दिन काम करने वाले 78 लोगों को अब तक पैसे नहीं मिले हैं। केंद्र द्वारा 100 दिन के काम का बकाया नहीं देने पर मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने राज्य सरकार के कोष से पैसा देने का फैसला किया है। गौरतलब है कि बीजेपी ने संदेशखाली के लोकसभा सीट बशीरहाट से संदेशखाली की पीड़िता रेखा पात्रा के नाम की घोषणा की है।

कांग्रेस अध्यक्ष ने राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को पत्र लिखकर की यह मांग

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को पत्र लिखकर आग्रह किया कि सैनिक स्कूलों के 'निजीकरण' संबंधी कदम को वापस लिया जाए और इस नीति को रद्द किया जाए। खरगे ने पत्र में कहा, ''आप जानती हैं कि भारतीय लोकतंत्र ने पारंपरिक रूप से हमारे सशस्त्र बलों को किसी भी दलीय राजनीति से दूर रखा है। अतीत में सरकारों ने सशस्त्र बलों और उसके सहयोगी संस्थानों को विभिन्न राजनीतिक विचारधाराओं की छाया से दूर रखा।'' उनका कहना है, ''आप इस व्यापक रूप से स्वीकृत तथ्य की सराहना करेंगी कि यह जानबूझकर किया गया स्पष्ट विभाजन उच्चतम लोकतांत्रिक मूल्यों के अनुरूप था और अंतरराष्ट्रीय अनुभवों पर आधारित था। इसने वास्तव में हमारे लोकतंत्र को मजबूती से फलने-फूलने दिया, भले ही दुनिया भर में शासन व्यवस्थाएं सैन्य हस्तक्षेप, लोकतंत्र को नष्ट करने और मार्शल लॉ का शिकार हुईं।'' कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा, ''मैं आपके ध्यान में एक आरटीआई (सूचना के अधिकार) उत्तर पर आधारित एक जांच रिपोर्ट को लाना चाहता हूं, जिसमें बताया गया है कि सरकार की ओर से शुरू किए गए नए पीपीपी मॉडल का उपयोग करके सैनिक स्कूलों का निजीकरण किया जा रहा है।'' उन्होंने कहा, "अब इनमें से 62 प्रतिशत स्कूलों को लेकर बताया जाता है कि उनका स्वामित्व बीजेपी-आरएसएस नेताओं के पास है।'' खरगे ने आग्रह किया कि राष्ट्रीय हित में इस निजीकरण नीति को पूरी तरह से वापस लेकर रद्द किया जाए।

स्मृति ईरानी का राहुल गांधी पर हमला, बोलीं - वायनाड में आतंकी संगठन के साथ मिलकर लड़ रहे चुनाव

केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी ने एक बार फिर राहुल गांधी पर हमला बोला है। अमेठी के मेदन मवई में आयोजित कार्यक्रम के बाद उन्होंने कहा कि राहुल गांधी ने वायनाड से नामांकन के दौरान लिखकर घोषित किया कि वायनाड हमारा घर है। जब वह राहुल गांधी का घर है तो अमेठी क्या है? कहा कि मैंने लोगों को रंग बदलते देखा है। परिवार बदलते पहली बार राहुल गांधी को देखा है। राहुल गांधी आतंकी संगठन के साथ मिलकर वायनाड का चुनाव लड़ रहे हैं। ईरानी ने कांग्रेस पर जमकर निशाना साधा और कहा कि कांग्रेस लगातार यहां सत्ता में रही लेकिन कांग्रेस ने कुछ नहीं किया। उन्होंने सरकार की नीतियों पर प्रकाश डाला। कहा कि आज 4 लाख 20 हजार किसानों को अमेठी लोकसभा में 6 हजार रुपए सालाना मिल रहा है। पांच सालों में 1 लाख 14 हजार गरीबों के आवास बनवाए जा रहे हैं। अमेठी लोकसभा में 19 लाख लोगों को राशन मिला है साथ ही चार लाख से ज्यादा परिवारों को शौचालय मिला है। उन्होंने आरोप लगाया कि 50 साल तक एक छत्र राज कांग्रेस का अमेठी में था लेकिन कांग्रेस ने गरीबों के लिए शौचालय तक नहीं बनवाया। कांग्रेस चाहती थी कि गरीब हमेशा गरीब ही रहें और अमीरों के आगे हमेशा हाथ फैलाता रहे। इस दौरान सांसद ने पश्चिम बंगाल की ममता बनर्जी सरकार पर भी जमकर निशाना साधा।

अखिलेश यादव ने सुनीता केजरीवाल से फोन पर की बात, क्या हुई चर्चा?

सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल की पत्नी सुनीता केजरीवाल से फोन पर बातचीत की और उनका हाल चाल पूछा। आप सांसद संजय सिंह इसकी जानकारी दी। उन्होंने अखिलेश यादव का आभार जताते हुए कहा कि संकट की घड़ी में जब हमारे पार्टी के मुखिया (अरविंद केजरीवाल) को जेल में डाल दिया गया है, सपा प्रमुख हमारे साथ खड़े रहे। संजय सिंह ने कहा, "अखिलेश यादव ने दिल्ली में रैली में पहुंचकर उसे संबोधित किया। आज भी उन्होंने सुनीता भाभी से बातचीक करके उनका हाल चाल पूछा। मैं इसके लिए विशेष रूप से इनका आभार व्यक्त करता हूं।" अखिलेश यादव के साथ साझा प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए संजय सिंह ने दिल्ली में राजकुमार आनंद के इस्तीफे का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा कि हमारे एक मंत्री पर पहले ईडी का छापा पड़वाया गया और बाद में उस पर इस्तीफा देने का दवाब बनाया गया। संजय सिंह ने दावा किया कि दिल्ली में 'ऑपरेशन लोटस' शुरू कर दिया गया है। आप सांसद ने आगे कहा, "ये 2024 का चुनाव कोई सामान्य चुनाव नहीं है। ये भारत के लोकतंत्र को बचाने का चुनाव है।

जानिए किस पार्टी ने कितनी महिलाओं को दिए लोकसभा चुनाव में टिकट, सभी ने किया निराश!

▪ आधी आबादी डेस्क

संसद में करीब 27 साल से लटके महिला आरक्षण विधेयक (नारी शक्ति वंदन अधिनियम) को सितंबर 2023 में पारित किया गया था। इसने महिलाओं के लिए एक तिहाई विधायी सीटों के आरक्षण का मार्ग प्रशस्त किया। हालांकि, जनगणना और परिसीमन के बाद ही इसके लागू होने की संभावना है। मतलब, 2029 से पहले ये लागू नहीं होगा। AIMIM को छोड़कर सभी प्रमुख राजनीतिक दलों ने इसका समर्थन किया था। कुछ ने इसे जल्द से जल्द लागू करने की बात भी कही। मगर, 18वीं लोकसभा के चुनाव के लिए जब पार्टियों द्वारा उम्मीदवार उतारने की बात आती है तो महिला उम्मीदवारों की संख्या काफी कम नजर आती है।

आजादी के बाद से लोकसभा में महिलाओं का प्रतिनिधित्व कभी भी 12 प्रतिशत तक नहीं पहुंचा। इस असमानता का एक बड़ा कारण चुनाव लड़ने वाली महिलाओं की कम संख्या है। 1999 के बाद से पांच लोकसभा चुनावों में महिला प्रत्याशियों का प्रतिशत बेहद कम है। 1999 में कुल 4,648 उम्मीदवारों में से केवल 6.11 प्रतिशत महिलाएं थीं। 2004 में यह मामूली सुधार के साथ यहां आकंड़ा 6.53 फीसद पहुंची। 2009 में केवल 7 प्रतिशत महिला प्रत्याशी थीं। जो 2014 में 8.01 तक पहुंच गईं।

जानिए क्या कहते हैं चुनाव आयोग के आंकड़े

चुनाव आयोग के आंकड़ों से पता चलता है कि 2019 के आम चुनावों में 8,054 उम्मीदवारों में से केवल 726 महिलाएं थीं। यानी सिर्फ 9 फीसदी टिकट ही महिलाओं को दिए गए। इनमें से करीब एक तिहाई महिला निर्दलीय चुनाव लड़ी थीं और उनको किसी भी राजनीतिक दल का समर्थन नहीं था। 2014 में कुल 8,251 उम्मीदवारों में महिला उम्मीदवारों की संख्या सिर्फ 668 थी।

भाजपा ने 417 संसदीय सीटों के लिए उम्मीदवारों की घोषणा की है। इनमें से 68 (16 प्रतिशत से कुछ अधिक) महिलाएं हैं। पार्टी ने 2009 में 45, 2014 में 38 और 2019 में 55 महिला उम्मीदवारों को मैदान में उतारा था। वहीं, कांग्रेस ने अब तक जो सूची जारी की है, उसमें 247 उम्मीदवारों की घोषणा की है। इसमें 35 उम्मीदवार (14 प्रतिशत से कुछ अधिक) महिलाएं हैं। 2019 में कांग्रेस ने 54 महिला उम्मीदवारों को टिकट दिया था।

समाजवादी पार्टी ने 7 महिला उम्मीदवारों को टिकट दिया

यूपी में कांग्रेस के साथ गठबंधन में चुनाव लड़ रही समाजवादी पार्टी ने भी अभी तक 49 सीटों पर अपने उम्मीदवारों के नाम की घोषणा कर दी है। इसमें 7 महिला उम्मीदवारों को टिकट दिया है। उत्तर प्रदेश की एक अन्य पार्टी बसपा, जिसकी मुखिया मायावती महिला हैं, उन्होंने भी महिलाओं पर कोई ज्यादा भरोसा नहीं जताया। अभी तक उन्होंने 37 उम्मीदवारों को टिकट दिया है। इसमें सिर्फ 2 महिलाएं हैं। हालांकि, 2019 में मायावती के नेतृत्व वाली बसपा कुल 383 सीटों पर चुनाव लड़ी थी। इसमें 24 महिला उम्मीदवारों (6.3 प्रतिशत) को टिकट दिया था। जो कि बीजेपी और कांग्रेस के बाद देश में महिला उम्मीदवारों पर भरोसा जताने वाली तीसरी बड़ी पार्टी थी।

ममता ने 2019 में 23 महिलाओं को टिकट दिया था

इसके साथ ही टीएमसी ने पश्चिम बंगाल के लिए अपनी पहली सूची में जिन 42 उम्मीदवारों की घोषणा की। इसमें 12 उम्मीदवार (3.5 प्रतिशत) महिलाएं हैं. ममता ने 2019 में 23 महिलाओं को टिकट दिया था। इस लिस्ट में अभी तक सबसे खराब रिकॉर्ड आम आदमी पार्टी का रहा है। आम आदमी पार्टी 22 सीटों पर लोकसभा चुनाव लड़ रही है। हालांकि, उसने अभी तक 4 सीटों पर अपने उम्मीदवार घोषित नहीं किए है। मगर, जो लिस्ट आज तक जारी की गई है, उसमें एक भी महिला उम्मीदवार को टिकट नहीं दिया है।

पहले चरण में सिर्फ 8 फीसदी महिलाएं

इस बार के लोकसभा चुनाव 7 चरणों में होंगे। पहला चरण 19 अप्रैल को है, जिसमें 21 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की 102 सीटों पर मतदान होगा। पहले चरण में कुल 1,625 उम्मीदवारों ने नामांकन किया है, जिनमें 1,491 पुरुष और केवल 134 (8 प्रतिशत) महिलाएं हैं। अरुणाचल प्रदेश में 14 (एक महिला), असम में 35 उम्मीदवार (4 महिलाएं), मध्य प्रदेश में 88 उम्मीदवार (7 महिलाएं), महाराष्ट्र में 97 उम्मीदवार (7 महिलाएं), मेघालय में 10 उम्मीदवार (2 महिलाएं), मिजोरम में 6 उम्मीदवार (एक महिला), पुडुचेरी में 26 उम्मीदवार (3 महिलाएं), राजस्थान में 114 उम्मीदवार (12 महिलाएं), सिक्किम में 14 उम्मीदवार (एक महिला), उत्तर प्रदेश में 80 उम्मीदवार (7 महिलाएं), उत्तराखंड में 55 उम्मीदवार (4 महिलाएं), बिहार 38 उम्मीदवार (3 महिलाएं), अंडमान और निकोबार द्वीप समूह 12 उम्मीदवार मैदान (2 महिलाएं), मिजोरम 6 उम्मीदवार, (1 महिला) और पश्चिम बंगाल में 37 उम्मीदवार (4 महिलाएं) मैदान में हैं।

सर्राफा बाज़ार

22 कैरेट सोना	चांदी
₹67,380	₹89,000
प्रति 10 ग्राम	प्रति किलो

बिहार लोक सभा चुनाव में लालू की बेटियों ने झोंकी पूरी ताकत!

लोकसभा चुनाव से पहले तमाम राजनीतिक दलों ने अपने-अपने लगभग सभी उम्मीदवारों का एलान कर दिया है। इस बीच, बिहार की क्षेत्रीय पार्टी राष्ट्रीय जनता दल(आरजेडी) के आज लोकसभा के उम्मीदवारों की सूची जारी है। जिसमें पार्टी के प्रमुख लालू प्रसाद यादव की बेटी मीसा भारती और रोहिणी आचार्य को भी चुनावी मैदान में उतारा गया है। सूची में 22 नामों को शामिल किया गया है।

बिहार की सारण लोकसभा सीट पर आरजेडी ने लालू प्रसाद यादव की बेटी रोहिणी आचार्य को चुनाव मैदान में उतारा है। क़रीब डेढ़ साल पहले पिता लालू प्रसाद यादव को अपनी एक किडनी दान देने के बाद रोहिणी आचार्य सुर्खियों में आई थीं। अब रोहिणी के सामने सारण की उस लोकसभा सीट को जीतने की चुनौती है, जहाँ से लालू पहली बार सांसद बने थे, लेकिन पिछले दो चुनावों से इस सीट पर बीजेपी का कब्ज़ा है। रोहिणी का इस सीट पर सीधा मुक़ाबला बीजेपी के वरिष्ठ नेता और पूर्व केंद्रीय मंत्री राजीव प्रताप रूडी से माना जा रहा है। रूडी साल 2014 से ही लगातार इस सीट से सांसद हैं। ख़ास बात यह है कि सारण सीट को लालू प्रसाद यादव का गढ़ माना जाता है। वो 4 बार इस सीट से सांसद रहे हैं। सारण सीट से लालू की पत्नी राबड़ी देवी और समधी चंद्रिका राय भी रूडी के ख़िलाफ़ चुनाव मैदान में उतर चुके हैं, लेकिन दोनों ही चुनाव हार गए थे। रोहिणी आचार्य ने मीडिया से एक बातचीत में कहा कि, "राजनीति मेरे लिए नई चीज़ नहीं है। मैं बचपन से यह सब देखती आई हूँ।

■ हीरेंद्र झा

मैं राजनीतिक परिवार से हूँ। माँ-पिताजी और भाई राजनीति में पहले से हैं। मुझे सारण की जनता से जो प्यार मिला है, उससे मैं हैरान हूँ। इस तेज़ धूप में भी इतने लोग मेरे स्वागत में आते हैं जो देखकर खुशी होती है।" रोहिणी आचार्य लालू प्रसाद यादव के नौ बच्चों में दूसरी संतान हैं. लालू की सबसे बड़ी बेटी मीसा भारती हैं। मीसा पाटलीपुत्र से चुनाव मैदान में हैं। मीसा भारती फिलहाल अपने बयान के कारण सुर्खियों में हैं। उन्होंने एक बयान में कहा है कि अगर चुनाव के बाद इंडिया ब्लॉक को जनता ने मौका दे दिया तो पीएम समते सारे बीजेपी नेता जेल के अंदर होंगे। मीसा भारती के बयान पर विजय सिन्हा ने पलटवार किया है। सिन्हा ने कहा कि मैं चुनौती देता हूं किसी भी भाजपा नेता पर आरोप साबित करके दिखाएं। जिसके बाद यह विवाद थमने का नाम ही नहीं ले रहा है। इससे पहले मीसा भारत ने राम मंदिर के मुद्दे पर मीसा भारती ने कहा था, हम भी हिंदू हैं। सनातनी हैं, समय निकालकर पूजा करने जाएंगे। अयोध्या का राम मंदिर कोई मोदी जी और बीजेपी का थोड़े ना है। बहरहाल मीसा का मुकाबला बीजेपी नेता रामकृपाल यादव से है। अभी मीसा राज्यसभा की सदस्य भी हैं।

मीसा भारती और रोहिणी आचार्या को लेकर लालू पर एक बार फिर से परिवारवाद का आरोप लगा है लेकिन सभी आरोपों को दरकिनार करते हुए दोनों बहनें पूरे दम-खम से चुनाव अभियान में जुटी हुई हैं।

जब 'हीरामंडी' से उठी 'इंकलाब जिंदाबाद' की आवाज, भंसाली ने खोला इतिहास का ये अध्याय

■ आधी आबादी डेस्क

पद्मावत और देवदास जैसी सफल फिल्मों के लिए मशहूर निर्देशक संजय लीला भंसाली अब डिजिटल प्लेटफॉर्म पर दस्तक देने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं। लंबे वक्त से भंसाली की डेब्यू वेब सीरीज हीरामंडी-द डायमंड बाजार का नाम सुर्खियां बटोर रहा है। बीते सप्ताह सोनाक्षी सिन्हा और मनीषा कोइराला जैसी अदाकाराओं से सजी इस वेब सीरीज का ट्रेलर भी रिलीज कर दिया गया है।

हीरामंडी के इस ट्रेलर में लाहौर की तवायफों की भारत की आजादी में अहम भूमिकाओं के योगदान दर्शाया गया है। हीरामंडी-द डायमंड बाजार के इस ट्रेलर में दिखाया गया है कि आजाद भारत से पहले लाहौर के रेड लाइट एरिया की तवायफों ने किस तरह से ब्रिटिश शासनकाल की नींव को हिला कर रखा दिया। देश स्वतंत्रता संग्राम में इनका योगदान कितना अहम रहा है, वह आपको भंसाली की इस सीरीज में देखने को मिल जाएगा। इसके अलावा हीरामंडी के शाही महल की अनसुने कहानी को संजय लीला भंसाली ने इस ट्रेलर में बखूबी दर्शाया है। संजय लीला भंसाली के निर्देशन की वजह से ट्रेलर काफी मंत्रमुग्ध कर देने वाला है, जहां हर फ्रेम एक कैनवास है। ट्रेलर हमें उस समय में ले जाता है, जब वेश्याएं रानी और राजा के रूप में शासन करती थीं। 1940 के दशक में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की अशांत पृष्ठभूमि पर आधारित वेश्याओं और उनके ग्राहकों की कहानियों के माध्यम से सीरीज हीरा मंडी के इसी नाम के क्षेत्र की सांस्कृतिक वास्तविकता को दिखाती है। कैंसर जैसी बड़ी बीमारी को मात देकर भी मनीषा आज एक्टिंग में पहले की तरह ही एक्टिव हो गई हैं। उनका स्टाइल और गॉर्जियस लुक देखकर उम्र का सही अंदाजा लगाना तक थोड़ा मुश्किल हो जाता है। भले ही बाल सफेद हो गए हों लेकिन फैशन के मामले में वो अब भी सबसे हटकर नजर आती हैं। ट्रेलर में अपने लुक से उन्होंने भी दर्शकों का दिल जीत लिया है।

बैकग्राउंड म्यूजिक लेकर प्रोडक्शन का काम भी आपको आकर्षित करेगा। कुल मिलाकर कहा जाए तो हीरामंडी का ये ट्रेलर इस वेब सीरीज के लिए आपकी उत्सुकता को बढ़ाने वाला है।

सोनाक्षी सिन्हा, मनीषा कोइराला, ऋचा चड्ढा, अदिति राव हैदरी, शर्मिन सेहगल, संजीदा शेख, शेखर सुमन, फरदीन खान और अध्ययन सुमन की झलक आपको हीरामंडी के इस ट्रेलर में देखने को मिल जाएगी। बता दें कि 1 मई 2024 को इस वेब सीरीज को नेटफ्लिक्स पर ऑनलाइन स्ट्रीम किया जाएगा।

प्रबंध संपादक: दिनेश के सिंह ❁ संपादक: हीरेन्द्र झा ❁ सलाहकार संपादक: चारुल मल्लिक, राजेश शर्मा, गीता सिंह ❁ डिज़ाइनर: मो. हसमतुल्लाह अंसारी

RNI-DELHIN/2013/51353